

• Title -	अज्ञात
• Accession No - Title -	
• Accession No -	
• Folio No/ Pages -	18 x 2 = 36, 12 - 30, 39
• Lines -	
• Size	
• Substance Paper -	
• Script Devanagari -	देवनागरी
• Language -	उत्तराखण्ड
• Period -	
• Beginning -	१२ अक्षरी पुस्तक भूगु - - -
• End -	३७
• Colophon -	
• Illustrations -	
• Source -	
• Subject -	
• Revisor -	
• Author -	अज्ञात
1. Remarks -	

उपरोक्त



शशिपुत्र नृगुणा एहेवे उदेविकास ॥ जगमहि जलधर वस सीकरे डकाल विना  
 श ॥ ३७ ॥ श्रावणमास बुद्धि उदयो नदयो सरसो सिध ॥ जे बुद्धि उदेना प्रव मै दरा  
 ना प्रव वर दे ॥ ३८ ॥ जे बुद्धि उदे प्रा श्रिने धल मै कमल करे ॥ समो होत यो हो  
 र मै सूके कमल करे ॥ ३९ ॥ समा होत चोहार मै जग वैह सख वसे ॥ ४० ॥ प्रथ  
 म कऊ रूप फले ॥ फालगुन चैत्र उदे सपदा सख करे वैशाख नृप पीडा जे खवधी  
 पडे ॥ आषाढ नही मीह श्रावण पशुधनी ना प्रव धान्य बद्धि प्रा श्रिने सन्न सुधी  
 ॥ ४१ ॥ कार्तिक मार्ग शिरे नल जगत महि प्रवही करे ॥ कदयो द्वादशमास प्र  
 कजे उदे फल निश्र करे को मान वचन एरु फल ॥ ४२ ॥ दो ॥ उदे प्रसि एका  
 पक्ष मै नृग को प्रत जो हो ॥ नृप के सत हजार को पिवत रुधर जो ॥ ४३ ॥  
 प्रथम कचक्र ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ चक्र की जे छट धारा प्राची विधि सो ना  
 ल ॥ तामहि प्रकज एधरो प्रक कर मै सन लाल ॥ ४७ ॥ चतुर चतुर चैवतीन राम  
 ॥ एह जाग ॥ नरसी प्रादि विवासीये निहि प्रक नर खडान ॥ ४८ ॥ चौ ॥ ९२



विद्यान ॥ ५४ ॥ <sup>१</sup>ता ॥ इचपो विरले जीवे कोइ ॥ ३० ॥ प्रथम लय योगः ॥ न उल्ल ॥  
 मूलमघा पृथगे हि रा देवे पुनर्वसु न भैत्रव शनि प्रविप दे दु काल मदे न दे श ॥  
 रुऊजा डे सकले दे श ॥ ३१ ॥ जगत ऊप द्रव डुष वौ ऊया ही षंड न भै मेघ नीष मगा  
 ३ ॥ चला चली स विजग म हि जा गुणै पद करे पछी हुंन ॥ ३२ ॥ मूला देवती प्रशि  
 नी मघा शनि प्रद जाय शंकर पूछि त गिर सुता दीये का वद ताय ॥ ३३ ॥ डोले  
 घट तीनि पडे ब्रह्मांड राहा काद करे न व छं डि ॥ दीप के राजा डंल जाहि कोहे गिर  
 सुता शंकर याहि ॥ ३४ ॥ मूल विद्या साक दि प्ररु मे वे जे शनि प्राय इन को मे  
 वे ॥ नाश करे पृथिवी स हुं जांन मां स न घे न द प्रप नो जांन ॥ ३५ ॥ मान सको मा  
 न सही याही प्रजन कि सही के घट याहि ॥ घे उ न्म मन द प्रप नो जाही जिं ही जावे  
 ति ही नृष मदां हि ॥ ३६ ॥ प्रथम गुरु उदय फल ॥ दो ॥ प्रसि ऊ दे ते पहिल ही जे हो ॥ ३७ ॥  
 बैघन धार ॥ ऊ दे हो इन हि वद स दीन हितो जाल प्यादि नारि ॥ ३८ ॥ तारे के दी ऊ  
 गमनी मंगल के दी बल ॥ पंडित ए मे विचा सी यो वर सै काल दु काल ॥ ३९ ॥



मे.मा.

९३

विमान ॥ ५४ ॥ पदित ॥ गुरुजो वार संक्राति से संदाना महे आपारी को लान जगल  
प्रघटान है ॥ हे मा पिका सो जो पीत वसु महिगी हो वे सुधी लोक वरु प्रसक्त हियो  
त्रैसे छुवै ॥ ५५ ॥ गुरुतवा दीना म भिन्न काना पीये तेल घेऊं प्रन जो घने ज  
ग देवीये ॥ घदि घदि संग लना दचौ पद दोह वधि आपारी जिन सुधी काम जग  
सन सुधे ॥ ५६ ॥ कही यो रा न सीना म संक्राति शनिद वार की घनो ऊप प्रव हो एग  
तस्वा की रुं ड मुंड सोय सी महिगा धान ही तेल कपाहे लूरा महिगा सुब हान ही ॥  
॥ ५७ ॥ प्रथम मास संक्राति फल ॥ पदित ॥ पौष की संक्राति हे विर विवादि ही  
धानो त्रिगुणो लान मास खरु कारि ही ॥ शनि वारी जे लान चो गुण पुं न्यो  
छटे मास महिजान कही मै मानते ॥ ५८ ॥ दो ॥ चरु बुध वार जे हो वे न सितो  
न विकास ॥ जे हो वे गुरु वार दम डो प्राध्यापारि ॥ ५९ ॥ प्रथम के संक्राति  
फल ॥ चो ॥ कर्क संक्राति दिन वर साय सिंह संक्राति कोरी जाय ॥ ते जल व  
सैं च दो मास को नून करयो मान विप्रसास ॥ ६० ॥ मुख निग्रस जो सिंह को प्रथ

राम

९३



मे.  
९

बहले चतुर मै जों घने घीर दूजे चौक ही वहु घन नीद ॥ पांचो दू मो माह सुती ना रष  
टति न माहि घने विलाश ॥ ४५ ॥ दो ॥ विना प्रकृते खट गृही एक राक्षि मेहि जाय ॥  
जोल योग इ सत्रा घी ए छत्र नंग कदाय ॥ ४६ ॥ चौपद पद जावो हु मरे य धि वी डामा  
डोल नि प्रकर पंडित लखो डक न की प्रद चोल ॥ ४७ ॥ प्रथम संक्रांति विवाद ॥  
दो ॥ जो चटका संक्राति की तां महि सा ति फिलाइ ॥ पहिला नाग जी सात के  
पुनती ना कादाय ॥ ४८ ॥ एक व बे सु न्नि लघना दो ते सम ता जाग ॥ सूनै सून  
विधानी यो पंडित कदे विवाद ॥ ४९ ॥ से कहियो धांसी नाम र विवादी संक्रा  
तिके वापु घनी संग्रम महि गा धान्य जे न र दुषी ॥ ५० ॥ दो ॥ नाम कहियो महे  
दरी से मवाद संक्राति ॥ धान्य घने जग सन सु घी र सक स घनो होवति ॥ ५१ ॥  
परिहा ॥ मंगल वादी नाम सघास प्रघी पे धेऊ गड प्रकृते ल सुजे हं महि ग जा  
नीये चौदा दल की चाल पुद्धि न पमानीये ॥ ५२ ॥ दो ॥ नाम कहियो मंदकिनी  
बुध वादी संक्राति र सक समहि गानी च न प व स न घने जग संति ॥ ५३ ॥ मृगे  
हरी जी वरुहे पं नादिक सो जाग ॥ महिगी हो व ही जग त मे न डल का सी



पूर्वीनामपदाकरि, प्रादिसवैठी हेर कहय। नरणी मज्जेशरपुष्पपूर्वाफालनी, प्रउ  
 राधापूर्वाद्याडाचनेष्ट। विवाउनाघरी से जा शीष्टे ॥ ७० ॥ अथेष्टास्वाती कृत्तिका उ  
 फाउ आशति निषा कहये देवती प्राद्राघौय श्रेष्ठासूती संक्रमकहीए ॥ ज्ञासंज्ञा  
 तिइनहू मै होवे घरी परी लघुसूती इनकागुन विनदि पंडित नली कर सूती ॥  
 ॥ ७१ ॥ सीयाहै सूती नली वैठी वधी काल उमले उनी नली जगमै करे सु  
 काल ॥ ७२ ॥ अथ संक्राति वधी फल ॥ चौ ॥ मार्गशिरका रिककी संक्राति  
 मध्यमसमा जो अन्नवरसे ति पोषमाघ हेवे जलघार वेती घनी सरवीन  
 रनार ॥ ७३ ॥ चैत्रफालनयेष्ट वैशाख जेवरसे घन संक्रमसान ॥ पदजा  
 राजासन्नजग सरवी, प्रेन्नघनाजग सोदे हात ॥ ७४ ॥ मिथुनवाधिके के ८  
 स्वीनामन होवे योग ॥ कृत्त्या मै जो वरसली प्रुन्न सर्व वनर लेह ॥ ७५ ॥ अथ  
 मास जयफल ॥ दो ॥ संवत ते रामासु ६ एक गति जावे मास ॥ उपश्रवति  
 सुवरस चदिणी सकल विनास ॥ ७६ ॥ अथ तेरे दिन को पक्ष का फल ॥  
 दो ॥ पुगसहस्रवीतिथ के विधि कै होवे पक्ष ॥ तेरा दिन पाछा होना सका ॥



बान्नीजेपीठतोयेतीनिश्रैकदोमेघनिरंतददीह ॥ ६१ ॥ रविशनिमंगलकर्क  
 सीहेवेजो। संक्राति, प्रवृत्तमहिगात्रलजलदेसेनगाकसंत ॥ ६२ ॥ जेबुधवासीको  
 दगीमध्यमाससवधान ॥ गुरुशुक्रशशिकेदिनतोजगसुनिहमान ॥ ६३ ॥  
 प्रथमैवसंक्रातिफल ॥ ६४ ॥ मीनमाससेक्रातिजो जेहोविबुधवाएध्वनेगजल  
 नहीयदितघदिघदिरुदतकदे ॥ ६५ ॥ प्रथमसंक्रातिमहर्नफल ॥ सर्पयेद्याप्राज्ञने  
 दणीशानिनिषापंद्रामहर्तेधर्णी ॥ एहसेक्रातिउपद्रवकरवाएकुदेनपपुधिक  
 दे ॥ ६६ ॥ परिह ॥ देवतीप्रवरणपुष्पमघापुनस्वातिहीस्त्रिप्रश्चिनीहस्तमगशि  
 रयातिही ॥ पूर्वातीनोमूलकृतिकाजानीयेधनेषा, प्रनुराधासोतीसमहर्ती  
 मानीये ॥ ६७ ॥ सन्नजगतमैसमतारहेजोइनकीसंक्राति ॥ प्रवृत्तनावसमही  
 रहेकहितसवेइमशान्ति ॥ ६८ ॥ चौ ॥ उत्तरातीनविशाखादीहिणी, त्रैलोक्य  
 वसुजानोसहीयेतालीमहर्तहोइप्रवृत्तधनोजगसुधीहोवे ॥ ६९ ॥ प्रथमसंक्राति  
 सुतीवैठीजानसहीफल ॥ चौ ॥ मूलाप्रवरणविशाखादीहिणी, प्रसिनमंघावताघ



मे. मा. होवे घनो विलास प्रन घनो जलघर घनो ॥ ८५ ॥ अथ प्रा. कामासफल ॥ परिहा. ॥  
 ९५ दो. चैत्र ते समा मध्यम ज्ञानी ये वैशंपज्ञात को उदय संज मे वै घनीये ॥ दे. स्वैश. अ  
 नला जग तमै सरव करे चेही होवे घनी काल जग हरे ॥ ८६ ॥ दो. ॥ दो. जे हून  
 पहान दे. प्रा. सा उजग घनो ध्यान्य ॥ दो. प्रा. वरा. फल जा. निकांति का ल परत  
 घरिनी डाले ॥ ८७ ॥ दो. न्ना. दो. वौ. ध्यान्य सर्व काम ना. जग फले ॥ दो. प्र. श्विन  
 चौरा नि उदे होत संग्रम वहु ॥ ८८ ॥ अथ एक मास पंचवार फले ॥ दो. ॥ पंचश  
 निश्वर पंचद विपा. चो. मंगल होही ॥ क. दो. उ. पद्रव भूमि मही विरला जीवे  
 को ३ ॥ ८९ ॥ दो. ग. घना. र. वि. पांचते मंगल प्रगन न प. व. रुदाप ॥ श. नि. पांच  
 एक मास जे. र. स. क. स. म. हि. पा. ५ ॥ ९० ॥ चो. श. ग. र. स. क. द. धि. स. त. च. रि. पांच जे  
 होवे वार ॥ मंगल कासी जग मै होवे कल्याण सर्व सरवी नरा श्रद्धेवान् ॥ ९१ ॥  
 पहिले मास शनि होइ दूजे मास र. वि. पांच सं. ॥ पांचो मंगल हो. जे मास दु. जे  
 पी. धे. ३. न. का. वा. स. ॥ ९२ ॥ दो. ॥ फिर त्व. क. यो. श. स. न. म. र. घ. नो. संग्र. म

राम  
 ९५



ततिनलोक्त ॥ १०॥ चौ ॥ कालपरतजगसाहेसहीजुं उमंड होवे संगली अही ॥ ११ ॥  
 वनंग प्ररु हाहाकार जय होवे सनही नर नाय ॥ १२ ॥ छ पंधर कैर व पांडस  
 लटे राम रावण यु धि को होवे जगत संहार कालनेवौ हजन विजै ॥ ब्रह्मा पुत्र  
 तुम देसाय कहवलिनादि हो ॥ वारावर्ष काल जग माही ते प उधो पुने क उध  
 इव जग मेक दत तेरा दिन को पाषाण रुधू मा धाम जो प द्वि होवे प्रे सै फल  
 नि प्रे च को ॥ १३ ॥ अथ पद जय फल ॥ दो ॥ द्वादश मास ही जय इक विधियो  
 जोगाति जाइ ॥ छ वनंग वान पान दे उके दीयो वताइ ॥ १४ ॥ द्वादश मास मास  
 एक गति जावे जो एहि जय होवे संसा द सनरा जम लच्छ कर ॥ १५ ॥ पाप बुद्धिस  
 न जग वसे होवि नीच प्रणाम ॥ जिं हीति हि ठो दी देखी येति ही घनो संग्राम ॥ १६ ॥ प्र  
 पति पत्त फल ॥ चौ ॥ मंगारि र पोष माघ फाल जू वैत्र मास जो पंखो सो गिन  
 देघ प्रकृति पन इकी गति जावे छ वनंग दुर्निह होवे ॥ १७ ॥ दो ॥ माघने प्रि  
 पोष तिथ प्रकृति जोगति जाय देघ ॥ तिते न मास न पम दे जे ती तिथि लजाए ॥ १८ ॥  
 प्रपति पत्त प्रध के फल ॥ सो ॥ द्वादश जानो मास ॥ कृति धि अधिक होइ ॥



मे.मा.

१६

उबुडेलहिवादावाढ ॥१॥ प्रथमी प्रमावस्था शनि विमै जलजे हो विरविशशि  
कौकुंडल ॥ पश्चिम दिशा सो विग्रह लरे युद्ध वीजवौ हते नर मेरे ॥१॥ चौथ पं  
चमी तोर सती जे रवि शनि मंगल वार लिखी जे ॥ जे रवि सीर विशाशि पद ॥  
दक्षिण देशी करत विकास ॥२॥ पूर्ण पंचदशी में वल्स दूज नै मर विश  
शिजे काद स ॥ तो विग्रह उत्तर दिशा जान ही नर चौपद की हो वेहान ॥३॥ प्र  
थकाल लक्षण ॥ चौ ॥ प्राद्य महीने पदे न सीत मूल जे मृग पतये मीत ॥  
प्राद्य मे जे वर से न ही लक्षण एहि काल ही सही ॥४॥ प्रथम काल लक्षण ॥  
चौ ॥ प्राद्य शीत फाल्गुण वायु चेत निर्मल सो देखाइ ॥ पंचवर्ण वादल वैश  
ख प्रथम वाकनी पा पद तवो ह शाख ॥५॥ जे मृग पतये मीत प्राद्य  
मे वर से घन नीर ॥ एहि लक्षण के हे मृग काल तव वर से मेघ जाग मही घनो  
॥६॥ प्राद्य डी पूर्ण मास शशि वार पूर्व वायु चले दिन सार ॥ गहिरा दिन हो  
त सादे जावे प्राद्यालागे निशा को प्राण ॥२॥ हृद्य म गशि मो हो हो इकत

राम  
१६

मगशि २ पाठ ॥

२९



रुंडमंडलनृगदुखीतोंकोफलमनप्रान॥२३॥अथरविशशिचंद्रपदि  
 वादफल॥सो॥रविशशिहोवेपरिवारितोंकोफलएहजानीया॥प्रनम  
 हिणोकारमेघमालामेंएकहो॥२४॥चौ॥पीतवरणतेहोवेदे॥प्रनम  
 तेवर्षाहोइस्पांमवरणतेराजा॥मदेनीलवरणतेवर्षापदे॥२५॥चौ॥चंद्रवरण  
 तेधूमाधामंजितेवोहसंग्रामघना॥उपद्रवजगमाहीहाहाकारकरेसज  
 कोइ॥२६॥दो॥रविशशिमंडिलकुंडिलादुहिरातिहसहोइदुहिरातिहि  
 राफलकरेनिकटानप्रनजोइ॥२७॥दो॥प्राधितोप्राधाफलहोइसादेतेसा  
 राफलजोइ॥रवितेदूरदूरतेफलकरेनिकटेशप्रापनेधरे॥२८॥न  
 डिल॥कृष्णपक्षचौदशपंचमीतीतीतिथिप्रहृतस्पालघुउत्तमूरुविश  
 निमंगलहोपदवारहितोविग्रहनपयुद्धिहोइ॥२९॥एकमनेमीदरा  
 मएकादशरविशनिमंडिलकुंडिलहोइतिसंयुद्धमिदुद्धमंडाभवस्सष्टम



मे. मा.  
१७

भाटीलोई ॥ नमकोपतारा गिरयो सिप्ररु विजुल पत्ता ठ निघं रुजग ही धुन करे  
॥१६॥ कंकरु हवर से परतूटे प्रथम नसर ॥ धूमकेतु सट्टा लंगर चट्टे प्रका  
से सुनो विचार ॥१७॥ जेको इ इ नवीचो एक इ नही नक्षत्र मे होवे टेका ॥ मंडल  
प्रति इ सकाना मता का फल सुनीयो ॥ प्रशिरा ॥१८॥ तिस वष वरु पण्डितो  
होई धरि धरि चिन्ता मागे लोई ॥ देश जला का प्ररु कस्मीर ऊतं पथि ज  
लंघर पीठ ॥१९॥ लैर कुनैर वमाल वजात दे से सोरठ कहो वधान ॥ इति  
का फल इन देश मंजार दुषी डा उपद्रव कार ॥२०॥ मरे नृप सो वो रुनर नादी  
चो डा हास्ती होवे संहार ॥ प्रति मंडिल प हिला नाघ्या जोग रुक हियो सो मे  
साना घा ॥२१॥ प्रथम पुमंडल ॥ शंकर दंड ॥ स्वाती विज्रा हस्ति मग शिर  
प्रश्रिनी वधान पूर्वा फल नी उत्तरा ॥ आदिते सा त प्रमाण ॥ यो देव वानि उप  
द्रवता हिते इ कहो इ जो इन नक्षत्र मा ही हो वा घव्य मंडिले जोई ॥२२॥ मे फल  
वधाने ता सको तम सुने नर धर का न घाले त पूजा देव गुरु देव होइ ध नि  
हान ॥ ये सारा ग्रह प्रज गिर को पवन ठा हो लो ॥ तूटे ऊरे ॥ प्रपट्ट घरणी मे

सम  
१७



प्र

कामे वषा जे होइ लखन एह सुकल सह मेघ माल मै जो एक हे ॥ प्रपचंद्र सा  
उदय फल ॥ १॥ जेश शिकं नीदामी सम हे वे तो समता वर ते सन लोक ॥ कु  
धक उपध वकिं सह देशाति समा हीम ही लखे देश ॥ २॥ दक्षिण के नी ऊची  
होवे तो दुर्भिक्ष घनी ही याई ॥ ऊत्तर दिशा ते ऊची नाल तो जग को शशिक  
रे निहाल ॥ ३॥ दे ॥ जेश शिकुगे सोम शनि एहि प्रचंनो जो ॥ ४॥ धनुष रे दि  
न तीसरे कर क म हि गो होइ ॥ ५॥ यदिरा ॥ प्रातिनिष्ठा पूर्वाघाट प्रसादे  
वती नर रा ज्येष्ठा ज्ञान ॥ चंद्र जे ऊग म तीघ्र त्रिनेत्र ग एक मास मै जगत दुख  
पाव ही होवे माज विनाश प्रेन्न म हि गा म ही ॥ ६॥ प्रपचंद्र ऊदे रंग चाफ  
ल ॥ ७॥ लाल बरु र स म हि गां ही शुक्ल वरु हे वे नी हुं ॥ स्पाम मी त रंग जाली  
ये पीत सुभिज होत ॥ ८॥ प्रपचार मंडल फल भा दे ॥ ९॥ प्रणिमंडिल पालि  
ही वायु दू स दे जाला ॥ वर्ण ती जामंडल चतुर्थ म रुद्र जाला ॥ १०॥ नडिल ॥  
पूर्वा फाल्गुनी म बा विषाखा पुष्य कृत्तिका नर राणी ॥ ११॥ पूर्वान्न प्रपदा  
मै जो एहि उपध व इन मै होई ॥ १२॥ यदिरा ॥ कंडल हे वन गे प्रदेम



मे. न.

१८

हे फल

हृदसवेया॥ श्रवणघनेष्टा दोहिरायेष्टा घनुराष्टा ॥ उत्राष्टा प्रोक्त प्रम  
चमहेद्रलघु॥ प्रत्रजौऊतपातकहे हैपाद्वेता इत्रमैएक हवे॥ इमनेनेने  
षविचार प्रेसा फलजगहेवे॥ ३१॥ सर्वसुखालपदता सुखकादी सिद्धिदे  
जाकेरी॥ दोगघटेनदनारी नोपददुषिनी हेनेकेरी॥ मध्यमघटकेरुते  
त्रदिलीपाणी पतिसामुद्र॥ इनेदेशना उपद्रवहेवे फलजाये॥ महेद्र॥ प्र  
वादे मंडिलका फल॥ नडिल॥ मंडिल प्रगित फल त्रिमासदशमेमासवाप  
व्यराष्ट॥ मास एकमै फल हेवे वारुण सातसतमहेद्रक दिरण॥ ३३॥ दो॥  
दक्षिणमै प्रगित नपकंद वाप व्यऊनरजाण॥ वारुण पश्चिममै हेवे युद्ध  
महेद्र ठान॥ ३४॥ अथ संक्रातिसमे मंडिल मध्य शशि फल॥ दो॥ जिसघ  
टिका संक्रातिकीलगे त्रधिमै नान॥ तिसीमा सी शशि देयी केर फलता  
सविधान॥ ३५॥ सूर्यलगे संक्राति यो शशि मंडल अग्नेय तो वर्षा नही  
मास तिस॥ उर्ध्वतस्करजग घनानप होसी लघु ॥ ३६॥ जे हेवे

राम



ਸੋ. ੫

वृक्षफलनादेहि ॥३३॥ धर्मतेन रक्ष्यते होवेकदेन पञ्चनीत ॥ ज्ञानमवदोषमयत  
नदवोदधीतद्विमीत ॥ पंचालदेससुरसेनमगधद्रावडजाग ॥ कुजैनवर  
वरपादसीकेसातमोपरवान ॥३४॥ देशहिमलिदेमारवाडविद्याचलना  
प्र ॥ प्रोदकोविद्याधरकरिनाटेहोईइनमैसंग्राम ॥ पुनदेरछोस्त्रामाहि  
होवेयाहिकोफलजोई ॥ वायव्यमंडिलविचारैहिकूरवातनहीकोई ॥३५॥  
प्रथमारुणीमंडल ॥ दो ॥ मृलाप्राज्ञानपूर्वायाडासर्पस्रष्टप्रान ॥ कुत  
रात्राप्रचदारेवतीप्रतिनिष्ठासतएहि ॥३६॥ दो ॥ तिनमैवीचतेएकहीहो  
इऊबइवजोइतोमंडलएहिज्ञानवृक्षफलसोफलेमैसाकीसीतिडीधले  
तेएहिदलेचीताहरिनेकृतकेहरिवननसेनैसजो ॥ कुवोइउज्यजोपातसर्वस  
ववसे ॥३७॥ घनीहातमगनीरमेघवोहतेपंदरनिदशनमैजान ॥ दो ॥ शे  
रठछरुकसीरविनासेमानीयो ॥३८॥ मरुतोपुसप्रसकोलकहोएऊजा  
रहीजीवयोनिकरिसहितहोइसंसारही ॥ नहोवाहोएनीलज्वलैहिले  
सीपंडितकरोविचारनडिल्लएकमही ॥ दो ॥ एममैमंडलफल ॥



मे. मा.  
९८

कनयचोर ॥ नमस्तलोकधननही परत एहि फल न पत्तो रो दि ॥ ४७ ॥ इंजं  
त्रीफल ॥ चो ॥ जल नम प्ररुहा हाकस महिगा धान्य को त संहार ॥ ४८ ॥ रवि म  
एह फल जगु प्रघ दीप के की इ रुवान ॥ ४९ ॥ सतल जगत मे होवे कल्याण  
होति ऊदे न प के वो हु मान ॥ शाल करण क एस सस्ते दु म शशि मंत्री ते ए  
हि फल होवे ॥ ५० ॥ महुग प्रं न प्ररुव र्मा धं ड पु द्व चोर जगत मे वो हु दंड ॥ मंज  
ल मंत्री क रै विकार छि र्घ दीप के इ रु विचार ॥ ५१ ॥ शाल चरे घने को दा  
जीवार कमल नीर रो पा के सार ॥ घने मै हु जग सारे पडे बुध मंत्री ते  
एह फल करे ॥ ५२ ॥ घने मेघ प्ररुखे ती धनी रोग सो कनय न ही दिनी फ  
ले वृत्त सर्व सुष एह लोक गुरु मंत्री ते एह फल होवे ॥ ५३ ॥ दो ॥ मेघ घने प  
रजा सुषी राजा वो ह सीर ॥ गधन जग मे वरु वरु जै हु होवे वाजीर ॥ ५४ ॥  
प्रतिन चोर नय पी डा ही प्राकल व्याकुल होइ ॥ महा धा धि दु निहि दु दु शत्रु  
मंत्री फल होइ ॥ ५५ ॥ प्रप म हि रा विचार ॥ दो ॥ प्रवा वा स्या नि र ने म

राम  
९८



मंडलवारुणीशशि संक्राति ही काल ॥ दोम प्ररु जग जगधनो साची जगि लया ॥  
 ॥३॥ शशी जो मोहेंद्र मंडले तो जग में घन जोरलो कसूर्य मंगल घने में नौ वात  
 निशोर ॥३॥ सन्न संक्राति तिहें देखीयो झाके फल सन्न माल ॥ मंडिल चंदो ह  
 के हे पाधे कृषि विशाल ॥४॥ प्रथम मेरा जाका फल ॥ दो ॥ जल धरि दान्य जो  
 प्रत्य ही जग तपी उमल लो ॥ तदवर निफलो जानीयो र विरुजा फल हो ॥  
 ॥४५॥ मंगल शोना घन घनान पस्य उदै वषानीये ॥ रोग घटे वौ रुधान्य हो  
 दश शिरा जा फल जाग ॥४६॥ विघ्न विग्रह व्याधि न पप्रति दोष जल धेर ॥  
 सा कुल जग महि फिरत मंगल न पफल रहि ॥४७॥ मेघ घनो पर जा सुखी द  
 या धर्म जग दान ॥ अर्नि न मंगल घदि घरे बुध राजा फल मान ॥४८॥ घन ज  
 ग सोरे सिपद तधे नु दुध वौ रु हे प ॥ अग्नि होत्र विप्र करति गुरु राजा फ  
 लया ॥४५॥ बेती मै वौ रुधनो जग त सफल त कराय ॥ घे रुधनी कल  
 गि ॥ दिन दिन प्र नान पफल जाग ॥४६॥ रोग घने मोषी उजग तरा जि



मे. मा.

२०

लक्षण फल ॥ चै ॥ प्रथम जाम नृकंपति होइ च नीपा उपर जा को जोइ ॥ ६३ ॥ दूजे जा  
मदिव सके जाल जग मे पड सी सही दु काल ॥ ६४ ॥ तीजे चै ये कं पे नृ ॥ ६५ ॥ ती  
सुनि न सदा जग चला ॥ दिन के चा रो जाम फल एहि क विवा सिधे नाथि  
जाग ॥ ६५ ॥ रात्रि प्रथम दू सरे जाम कं पति धर्त जानो प्रान ॥ पूर्व उत्तर रा  
जा दुषी डुऊ नाश को कन ही सुखी ॥ ६६ ॥ तीजे चै ये कं पे धरा दक्षिण पश्चि  
को नृ पमदा ॥ पश्चिम दक्षिण देवा विनाश रात्रि याम चतुर जाल ॥ ६७ ॥ इ  
ति श्री मेघमाला मुनि मेघ रात्रि विरचते गहन नक्षत्रा दिवर्वा लक्षण समस्त  
रनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ अथ गृहवक्त्री प्रलक्षण फल ॥ चै ॥ मंगल  
वक्त्री जात जो मीन राशि घन जारा ॥ नय व्याघ्र के विमोदनी महि गोधि  
ऊ प्ररु धान ॥ १ ॥ मंगल वक्त्री अक गहि जाते तो सुनि न देवा चंद्र मय लो  
क को कहित मेघ अनसिद्ध ॥ ३ ॥ बुध वक्त्री दस महि जा होइ अंग प्रनो ज

17

राम

२०



विहोइदवितिसत्रविमैज्राइ॥ प्रमावास्यापउवामिलततोरविशह् ॥ ५५ ॥ चंद्रतेरविसातमेमिलेगुरुदविएक॥ पृथमपउवामिलेगुरुगुरुद्वि  
 टेका॥ ५६ ॥ रविशशिकैजोगुरुगुरुमासएकमेहोइकोशसिद्धोपजगतको  
 लउतघनेनपलोक॥ ५७ ॥ ग्रस्तकुदतिप्राप्यमेग्रस्तविशशिकरतसंघा  
 र॥ जेशशिरविसादेग्रस्तजगमेपयतदुकाल॥ ५८ ॥ ग्रहनेहोइदविवार  
 को॥ जेनैलानदुर्निन॥ राजविग्रहसोमदिनमेहगातेलदसइत्तु॥ ५९ ॥  
 मंगलप्रगिननयचा लबोहबुधजनकविवार॥ ६० ॥ मजीठकुसुम  
 रंगबुधमहिगोहोइकार॥ ६१ ॥ गुरुदिनगहिनलखोइहीदुगगालान  
 नोहमास॥ रूपातेलकपाहघेऊसंग्रहिकरजोतास॥ ६२ ॥ नगस्तवा  
 रैगुरुनजेनधनोसंसार॥ सनसुषसोहोइमेदनीराजदिद्विसता  
 र॥ ६३ ॥ स्थामवस्तिललोहिहीसर्वप्रनप्रकार॥ लानचैगो  
 मासविकजदग्रहिणहोतशनिवारही॥ ६४ ॥ प्रपनूकेपलदस

न

२०



कोकोबोहदुध ॥ १३ ॥ दो ॥ गुरुमंगलशनिचक्रकेनपनेघरमेहोडुभीकं  
 तेलतिलमहिजाहोतनवमासलौजोड ॥ १३ ॥ प्रतीचारजोसोमपग  
 दुर्भिक्षराजायाबहिदुबधनाकोइनसुधीयेदित ॥ १४ ॥ प्रतीचारशानिजा  
 वहीवक्रेगुरुतेजाग ॥ नवेधंडसुर्भिक्षहेविंराजानेगविलास ॥ १५ ॥ वक्रे  
 गरुजोक्रुदहीसोमजापप्रतिचार ॥ दुर्भिक्षविग्रहराजाकोप्रजिघनोत्र  
 पकाद ॥ १६ ॥ चो ॥ क्रुदवक्रेजोक्रुदसुभाडसोमवक्रेजोप्रचजगयाहि  
 प्रघदीपकेनामीवानीमिघमालमहिमेघविधानी ॥ १७ ॥ प्रपराश  
 गरुविवारफल ॥ पदिहा ॥ रविकुजराहशानिप्ररराशएकमतिप्राड  
 तोपूर्वकादेशविनाशइहुइमे ॥ १८ ॥ मंगलवक्रुदविशरुशानिप्ररशरिक  
 हियो ॥ एकशशिजेहोइप्रकतरतऊनपविन्हेयो ॥ १९ ॥ कुजशशिराह  
 शानिप्ररगुरुएकशशही ॥ राजनेगहोइदेहीवोविनाशही ॥ नौम  
 गुरुदविशरुशानिप्ररराशइकधरनीहोइहोमसुदकोनाशरुन  
 ॥ २० ॥ दो ॥ मंगलचगुरुदविशराइकमहिजाहो ॥ प्रदतिलकेरुदसत्रत्य



गहोइ॥ गुरुवकी सन्निधि जगमहि गोरसकसुजोइ॥ ३॥ मध्यावधि गुरुवकी  
 सखराजा सन्निधि॥ पाछे फिरघर छाइ जे तौ मसि मोघुति उइ॥ ४॥ गरी  
 शनिहोवे प्रापरे गुरुवकी तौ ऐहिलान्न धान्न जे वोंगु रोगा स्वगुहि प्रनक  
 देहि॥ ५॥ वसतुलक के वक्की पाछे नगमु उज्जद॥ तौ प्राणिद परजा सकल  
 जवे दुषसख पाइ॥ ६॥ जव लगव सोही रहे महिगे घति प्ररुतेल॥ प्रेन  
 घनो जगससितिं ऊह मुनि नाथो जारण॥ ७॥ घराडि नरति शनिवक्की के प्र  
 श्चिनेमाहसी धाय महिगे होति एकवसी लोचो पदको दुषकार॥ ८॥  
 मृग शिर तेशनिवक्की जवे दोहिणी माहि॥ घेती जगमे वोह घनी रसक  
 ससस्तोनाही॥ ९॥ शनिवक्की जे मधाते जाय प्रेष्टा के दशालिकरणक  
 घति वरुघटे वोह जनमागति निन्दा॥ १०॥ कल्याणी ते वक्की जे प्रानि जावे  
 राश॥ राजपुद्धि दुर्भित्त वोह नगको करत विनाश॥ ११॥ वोहो उचुदा  
 ते वक्की जाय शनि पूर्वाधामाहि ठहराय॥ प्रहृदशमे होए दुर्भित्त



मे. मे. मा.  
२२

॥३॥ जगनिकसे घं डे की धार निही तिही होवे मायो मंद ॥ परतन घनि उपजत नह  
धान धर्म धान जस करै होन ॥३१॥ प्रथम वर्या कुपोषा ॥ हो ॥ प्राजे मंगल रथ रहे  
पाछे रथ होवे नान ॥ उनम हियो यो ही रहे तर से नल को धान ॥३३॥ जवल गपा  
देना मर तर विते मंगल दाश ॥ तैल पडे न विंद घनि मरै तौ घनी विष्णु ॥३३॥  
इति प्रथम कोड ॥ प्रथम संक्रांतिकोड ॥ दि. ॥ मेघ संक्रांत नही राशि होवे तुलमा ॥  
दुगणालान्न नौ मास ही सन्न धान हित पाइ ॥३४॥ ब. घ संक्रांति मै नान ही वधि  
कमै राशि होइ ॥ दुगणालान्न दुहु मास मै होवे संग ह धान क देइ ॥३५॥ मिषु  
न संक्रांति र वि होइ रोहिण पति धन दाइ ॥ तेल धान तिल संग ह हो ति ति गु  
णालान्न तिन मास ॥३६॥ क. र राशि मै नानु जे मिषु राप निम करे होव ॥ विकार  
रोध पुद्विजा रोग दुर्जित दास रालोक ॥ नानु सिंह र संक्रांति मै कुंभ चंद्रमा पाइ ॥  
विगुणालान्न दुइ मास मही धान राघ धनि तैल ॥३७॥ न. चतुर्जो के न्यास राम  
क्रमै मीन चंद्रमा होव ॥ राजध्वसन्न विन प्रहृष्ट न मार होवे लोक ॥३८॥



22



मे.ता.  
२३

कही॥ जो शरीर गुरु प्रावै जो ३९ फल ३३ जग मै करत सो ४८२॥ गड शकर सपास  
री हिंग गें हक पडाव सत्र ग सत्र घड वैदा मन लीजि दश मास हिले राघो नेर ॥ ५५॥  
मास दुका दश मै हद लान दुग रा दम ग जाना साह ॥ सर्व ध्यान राघो तिन  
मास चौथे मास दुग रा बक सास ॥ ५६॥ छुदा शांन कुं कुम दुह काल ददि  
रा देश संन है लाल ॥ नेग करे क समीर संदेश अपुन रा शजो गुरु  
परवेश ॥ ५७॥ सर्व वसुका संग्रह के केचना दितिक मास धरो ॥ चौथे  
मास हिवे चो सही लान सवा योग्रंथ ही कह ॥ ५८॥ उत्तर नेग करे गोदे  
श दुख पीडा प्ररु मर ही न रे ॥ मध्य देश प्रादिक सन जान दुस मै  
समा कर्क गुरु धान ॥ ५९॥ सर्व ध्यान दु कठे हे मास चरु मसर कपूर क  
पास गड कस्तूरी मरु चालाल तांज हि मास लान रा प्राल ॥ ६०॥ सर्व धा  
न स शिता जग जो दु छुदा सान ए हि मास हिग करे दु ॥ सिंह रा शि जो गुरु रा  
३ एते काज करे गो सार ॥ ६१॥ सर्व ध्यान का मंच ॥ यो मास चौच मे वेव  
न धरो ॥ त्रिगुण लान देय गो सार ॥ ६२॥ खजे कही ॥ छनो ही ॥ ६३॥

23

गम.  
२३



[illegible]



मे

नेमा  
२४

दमहिगोगाउतरवर्द्धिऊनगरुजोदेसमलिहि॥६५॥वृत्तणउतरमादुका॥  
 जारसंग्रहिकरुलाल॥मध्यदेशमैसमाकधानगरुप्रावेहिजवमीनहिवान॥  
 ॥६६॥देशतिसीमहिसेवाकरेकहिपोडुकालप्राकृतेहै॥इसकीकरियोरु  
 मरुविचारसुदगरुकांडिकरुपाप्रधिकाद॥६७॥अथशानिविचार॥जेप्रा  
 निजावेमेधमंजारतौगुजरातेकरतउजाड॥प्रन्नमहिगप्ररुदुमीपोला  
 केमेधपरितनहीजानेसोद॥६८॥गोशनिप्रवितौफलनालप्रबुद्धदेश  
 होवेदुकाल॥नदचौपदकाकरतानाशामरतनरेसलखाफलतास॥६९॥  
 मिथुनदाशिमहिजवशानिप्राडपिंगलदेसेजासुदमाद॥नाशकरतजा  
 नोमुलतानसर्ववसूकीहोवेहान॥७०॥कर्कशशिशनिवासकरंतहोवे  
 कस्मीरकानाश॥दुषपावतिसमाहिनरेप्राडतैननरुकोजवलेउरुग  
 सिंहशानिप्ररमहिजोवसेतौइनदेशनिबनेफलके॥पूर्वपश्चिममाल

25

राम  
२४



२८  
 सरिखपतेलकणकजुरुचरोसुरासानविज्ञानमहिम्ना॥ प्रोगापीडादु निद्रा  
 कमाइएसुमाशानगुरुकेन्याजाइ॥५८॥ मध्यदेशसुचोकाकमजचोपे मरु  
 वेचोप्राण॥ दलपतिधनजोहेवेचंगकालमहामरौधपरितजंजाल॥ ते  
 रसपरहिधनपतिहोइतुलमैगुरुकरेफलमै॥ ६०॥ रसकसतांवरुपा  
 तेलनौदिनप्राठमासमहिलैमेल॥ ऊपरवेचोदुगणालाहागुजर  
 तिमहिविघ्नकराइ॥ ६१॥ मारुदेशोपदतदुकालजेगुरुमिलहीप्र  
 लिकेनाल॥ सरुगुरुकोडकोहेइहुवातिमेधमहामहकहीविद्यात॥ ६२॥  
 सुषपावेसमजनजोवोसहीजलकरिपूराहोवेमही॥ चेतीवोहुतीजग  
 तहोइमाहिजोधनकेधदिमहिगुरुतांही॥ ६३॥ उत्तरविग्रहमध्यप्रका  
 लपूर्वदेशहिपडतदुकाल॥ तीनमासरवसुसर्वचनफाकरतमकर  
 गुरुपेव॥ ६४॥ मध्यदेशपूर्वकरवर्षावसु, राखलाहा॥ प्राकारसर्वेय  
 व॥ ६५॥



अहं नाना ही दूध दही वौह घदि घदि मांही ॥ घनी बात की बल है वाइ त्री सीमा ॥  
 चमहि वौह दुय पाइ ॥ ११ ॥ गेहूँ होवे जगधे घनी घर बूजा मीठा वौह न तो ला  
 जे होवहि जगसिक दार अग्नि जो दबौ ते तिल काइ ॥ १२ ॥ बौपद की फिंदे मर दुख  
 दगहि न होवे पर साइ ॥ सीत पछेता होवे सही थोड़ी होइ कपा सहि मही ॥ १३ ॥  
 काम कहै सन्न जग न देखे पंडित कर के ज्ञान ॥ जोग रला मवि वासा होइ तांका  
 फल तुम लखियो जोइ ॥ १४ ॥ प्रप सो मवाद गुरु लै का फल ॥ बौ ॥ अन्न ना  
 वस सता मै होइ प्रात साहि का काम विगाइ ॥ न्यामत वौह ती जग मै हिंयाइ  
 लोक न ले जग घटि ते ॥ १५ ॥ देश जो पछि ममहि हो रया दि मग रग  
 मते प्रपतर सा ॥ १६ ॥ तिल ले सो दगर न फाय सी जग सो तर वर सा ॥  
 १७ ॥ दधक ॥ १८ ॥ तल जग घने बालक बौह जे जन्म घने ॥ रोग घना  
 नर न सी ज पछे ॥ १९ ॥ वौह जग मर ॥ २० ॥ वै ॥ फल लखे ॥ राम  
 इ पंथ वौह मध्य ॥ २१ ॥ जे सी उत पते सा ॥ २२ ॥ शिवा सा होवे ॥ २३ ॥

 राम  
 २७



सौ पीह ॥ स्वचक्रपरचक्रजो लडे काल घनोदि ॥ २॥ वातिघनी  
 नैनाघो कहाना शकित रा निदे देव जिहा गंध ॥ वोह ॥ नीर रुध  
 वोह गी सो ॥ ३॥ घनप्रपवाइक विदुन परे माय ईश्वर ननु या मरे ॥ शनिको  
 लना घासो एही जो बक्र कर्म महिक ही ॥ ४॥ ज्ञापा फारसी मते मुहूर्त के गु  
 रुलेका विचार जिस बार है वेति सी बार का फल ॥ ५॥ मुहूर्त ना प्रज्ञा  
 स है कहियो फारसी माहि ता महि दहे सै होति है हिंदू को कछ नाहि ॥ ५॥  
 चउतलंदयो दहियो का प्रगले दिन दिस नाल ॥ तांका गुरलाना महै तांकी  
 करो बिचार ॥ ६॥ तिस गुरले दिन बार जो तांको फल तुम जो ॥ प्रौद मासन  
 ही देखीयो देखु मुहूर्त सो ॥ ७॥ उत्तम देखी बक्र जहि मै जाधी इहिल्या ॥  
 रोसनिको ३ की जूयो गुरली जो ३ स नाल ॥ ८॥ फलगुरलेका वर्ष मै  
 व तलिघयो मत मै फल देखो प्राप दिग इहिलिघो कर श्रीति ॥ ९॥ प्रपश्वि  
 बार गुरलेका फल ॥ घने मेघ प्ररु स सेधान मेवा हा छत रुवै गुम ॥ १०॥  
 तसा हिका सन्नलालो क सुखी हो वेही बौ ॥ ११॥ चोपद के स



मे. मा.  
२८

जग बीच ॥ मरहे उवराइ दोलत वंत को नोहु दुष याइ ॥ २६ ॥ चंदगहि न, २९  
तिनी घनी हिंद न मयै द हि सति न नी ॥ चौपद के मरु म हिं गो धन मे वी न  
य जो हे विहा न ॥ २७ ॥ चौपद को वध कवौ हति, अग्नि जो रुज गमा हि क रं ति ॥  
खलु लप रत सां ही हि द्य रा बुध वा रू रू लं जे क रा ॥ २८ ॥ अथ गुरु वार रू रू  
ले का फल ॥ चौ ॥ प्राधे में रुज प ड्व ना हि रा जा प र ना सु ष घ रि मा हिं ॥ दर दु  
प रा प्रा वृ जे ले क प श्र पं घं सि यी पो स न हो ग ॥ २९ ॥ धे ही हो वे मरु वं प र  
स्त्री के कुच म हि दुष का र वा लि क रोगी म र जे जौ का ह दि स मे हो इ न सो इ  
॥ ३० ॥ सी ति प रि त प धे ता स ही मे घ ल धी सो ने सी घ ही ॥ गुरु वार गुरु  
ले का फल ॥ ए हि क हियो प्सा र सी ल य यो ते ही ॥ ३१ ॥ अथ मरु वार रू रू  
थे स न र स न स हि वि रो धि क रा डू धं जि ग स न ही दि श  
थाइ ॥ मे रु व रि ते मे वा मी ठ अग्नि घ नी, ग क सि, क रू ॥ ३२ ॥ प द न  
घ नी प्र र

२७

२७

२८  
२९



मे. ४  
२६

प्रथमंगल ॥ जगदे होवे वैकुण्ठ का नमं नून परत नम  
पर नहिब ॥ दो ॥ नका सोदागर वैकुण्ठ माल ॥ कइ जग मे  
हे जो प्रवीर ॥ लसी पशुवन पीर पोडी फल त ॥ सिउजार तूटे तरव  
र पवनै नचा ॥ म ॥ इशकंर कुपाह ही खंड नडे लोक कर दे दंड ॥ तिलगे  
हंमहि जे होइ लो ॥ वाप पत्र महि दगा सु होई ॥ यो दोहु नर महि पुरुष ज  
रविको गहरा ॥ राचला त ॥ ॥ तिडी मूसा प्रहि प्रतिघना करित मनी ति  
जगति महि नना ॥ फल न्याये सै देयो दोइ मंगल वार गुरला जे होइ ॥ २३ ॥  
प्रथम नुच वाद गुरले का फल ॥ दो ॥ गड महि गा प्ररु जान कपा सहि दिभू  
मका होवे नाश ॥ उज्जु जापन रपर देश न ही दरवाले हो हिं कलेश ॥ २४ ॥  
मानव पंधरी हे विदेग पात साहिका को मन होइ ॥ जो हो वे पाति साही  
कामतां को लग सीबो हते दाम ॥ २५ ॥ मी हुन पर सी ॥ प्रपने सवे सुता  
गर को लाहा कमे ॥ जग बीच मर है उमराइ ॥ लत वंद को लाह ॥ २६ ॥



मे. मा. प्रपदाशस्तामी॥ दो॥ ॥ रवि गिरुजानो सिंही कर्के गेहि शशि नाल॥ मेघ वश्विने नुम  
 ३२ सुत युग के न्या जसाल॥ ४३॥ गरुचाप मीन ही जान बघतुल प्रक्रमे हि मन्द रंज  
 महि शनि वाते स्वामी रास जो एह॥ ४४॥ प्रपगह स्थिति॥ दो॥ ॥ रवि स्थिति जा  
 नोती सदि न शशि दिन सवा जो दो३॥ मंगल पक्ष विक जानी पोवी सदि क  
 बुध जो३॥ ४५॥ तेरा मासै गरु वसे मास प्रकलं सु एक॥ तीस महीने शनि रहि  
 ति जानो इन की टेक॥ ४६॥ मास प्रहादा वसति है राहु के तुवै जा न॥ कंन्या गह  
 है राहिके राहु के तुइ कहां न॥ इति श्री मेघ माला मुनि मेघ राज विरचते ग  
 हिव की प्रतीचाद फल नाम त्रितीये॥ अधिकार समाप्त॥ प्रपसगन ध्याइति  
 ष्यते॥ प्रपकृत्यात फल॥ शंकर धर॥ जो कृप गजे न्मम कं पे फटे घटि ही कोइ  
 संध्या समै जो परत ता रा करिति सारे लोक॥ धात पाधु हंसति प्रदी मा स  
 दुरुद निरचार॥ सकल इह फल एही मा जो दे शाना कदा॥ १॥ चौ॥  
 रुधिर कां कदा वरि शति धूर घनी वा लु क रिति चक नू विनो वा दरे निज

राम  
 ३२



जगहोइनदचौपदकौसवकोरुजहोइ॥३३॥ नारमध्यमप्ररुहेवीचमीमध्यमसौ  
 दासाहेप्रमी॥ससतेगंहेएकहीजानप्रादप्रंजकीक्रमतीमा॥३४॥ जोगुदलाहो  
 इन्नगुकेबायतिसवर्धकोन्नगुसिकदादनामकहियोतिसवैधदासन्नगुकागुरु  
 लएहफलन्ना॥३५॥अथप्रनिवादगुदलेकाफला॥वे०॥तूटेमारगजंगकंसाई  
 जंगवीचवहुनमदजाइ॥एरापतिहोवेसवेवैरांनपातिसाहिमनसाकुजमान  
 ॥३६॥शालदूसीकाशनिःपतिसाहिदसमहिगूठकहियोकह्युनाहि॥शनिनारा  
 गुदलाजेहोइतिसकेफलजानोइहुलैइ॥३७॥कहीफारसीमाहिविचारत  
 कीविधिजापीइहुसासकहितमेधत्रयिसुनीयोवातइसकाफलजानाविद्यात  
 ॥३८॥रविशनिमंगलगुरुजानन्नगुशानिसातेवादंप्रमाण॥सातवारगु  
 दलाफलकहियामेचाव्याजैसाइहुलहिया॥३९॥जानवानेहिप्ररुसजोनही  
 रावान॥जलकादहिजलहिजसजोइकहियामुहुनसफेदवि  
 लो



मेमा

३

करिऊपद्मवज्रम॥१॥ नै॥ मेडिकमाये बोटी होई निडे प्रतिभा प्रापे दोर॥ तौ जग  
महिबहु युद्ध होइ दो॥ बहिमां उघनी नरतार॥११॥ प्रकसमातसूके हुं दे दोइ वर  
प्ररुप्रितिमालघोकंपाड॥ प्रामससरषादी सतधान तौ जग डालत कालकरा  
न॥१२॥ दो॥ गोनैसा वधामहिषघोदी के घोरपाड॥ गोनैसवा दजनत ड  
हिविपदीत कराड॥१३॥ फल इसको एही लघो जगमहिष विपदीत॥ करत  
नको सममान किसघटत जगत को प्रीत॥१४॥ जनमतिघालक के हुवे तीन सी  
सका दोड॥ माति पिता निश्रेन घेरा न ससम लल होइ॥१५॥ कि हतर को फल  
किं हरतरुलागत प्रवप्रनार॥ हितघेटी प्ररुतिफल हिकष जगत सोकार  
॥१६॥ सीतसमे प्रतिऊल उलसमे होइ सीतरो गउधितिसन जगत मोह॥ इस  
को फल इहिमीति॥१७॥ शशिदविदीशतिना नतो धूमधि प्रवाहोइ॥ उदे  
होति रविशशिलघो जगत ऊपद्मवज्रोइ॥१८॥ सतिउ जोरे दिनतिमदे स

33

राम  
३



ली प्ररुगाजविनका लहिवर्षाको साजु ॥ ३ ॥ धरती धरहटे कहुत विकार चडत के  
 तुजे। चोटी दार। इनका फल जग काल जो प्रन देश उपद्रव के शमन ॥ ३ ॥ पविता ॥  
 देवपन्नगं धर्वपुत्री, प्राकारमेतादाद विश शिगर हण गृ स्पे ही प्राप मे लक उपद्र  
 वहें उ दिवस निस देसी ये युद्ध काल दुष्ट दोग हि प्रन प्र लिखी ये ॥ ४ ॥ दोन रात  
 ही तें प्र धन्य होइ जे दी रात पच देग ॥ धनी होति उता तिजग करित धन के  
 नंग ॥ का कल वे जो रातिको दिन के बोले स्थाल ॥ प्रन मही राजा मरित परत ज  
 गत दुहि काल ॥ ६ ॥ तीतर यो राम हि सग वधनो करत निश वै नन चत नृत  
 मगर ह मातिको तव जग लहे प्रचै न ॥ ७ ॥ जि सी गो उमहि उरि उचत तों को  
 उरु बहु होइ ॥ पुद्धि परित सो मासी ये सग न दिचा दो सोइ ॥ ८ ॥ विना फिराइ  
 चाकी फिरे निस सग ली ही जान ॥ तो जग मरि उता तवो ह म सु प्रग म ही मान  
 ॥ ९ ॥ खावत जात स्वजातिको तरुते निक सति धूम ॥ प्र ३ मि प्रगं प्ररुग परि



मे० ग्रा०  
३६

सगन तेहि की प्रोवधानी यो मेघ से रूतै गाइये ॥ ३ ॥ प्रथम कावेन्ता या सगन ॥ प्रथम  
पहिर फल ॥ चौ॥ पूर्व पहिले पहिर सुनका कधुन परा मिलति तिसु के वाक ॥ दूजे  
अग्नि तीसरे न प पहिर चतुर्मेहि धन को जय ॥ ५ ॥ प्रथम अग्नि कुरा का फल ॥ चौ॥  
अग्नि पाम पहिले फल एहि वैसी मिलसी जानो ॥ ६ ॥ दूजे लक्ष्मी कलहि तीजे वात  
विदेसी चौथे लहे ॥ ५ ॥ प्रथम दक्षिण फल ॥ चौ॥ प्रथम पहिर तो दक्षिण दिसे वा  
छि मित्रि ही ॥ दूजे लसे तीजे विद्या पावे सही चौथे सखी वात सकही ॥ ६ ॥ प्र  
थमै जत फल ॥ चौ॥ नै जत केण प्रादि मग होइ दूजे पाम चौद जय जो ॥ ती  
जे रोग तन नै जान चौथे मरन कहो सुनिवान ॥ ७ ॥ प्रथम पश्चिम फल ॥ चौ॥ प  
श्चिम पहिले वर्षा नाल धन दूजे जांम म हिला ल ॥ तीजे कल हिन तु र्यम मित्रा प  
श्चिम चारे पाम सु मित्रा ॥ ८ ॥ प्रथम वायव्य कोण फल ॥ चौ॥ वायव्य पहिले धन  
प्र रुका ज मित्र लान दूसरे दा जि ॥ तीसरे धन का लान रुका दू चौथे मित्र वि  
द्या जाया ॥ ९ ॥ प्रथम उत्तर फल ॥ चौ॥ उत्तर प्रथम पाम मन्य देउ दूजे लान

राम  
३६



सतजोरीसनमुखेप्रयवादाहिमेप्राइ॥काजहोतजतिमिलेमेघदीयोवताइ॥  
 ॥८॥वाहरदूजीकोबिरीमुरदकोईनाल॥दांहिनलीजैमैघप्रनजानोसगन  
 सुलाला॥८॥नाजनदधिसतीनरयोसनमुखलेकोइप्राइ॥मेघबैलनस  
 जानीयोशकलमनोर्षपाइ॥८८॥प्रधनजंगिछंद॥जोयेवैलप्रधिसजेता  
 पप्रवेसवोकाजवैसगनमेघहोवे॥१०॥८॥मालासेतजफूलकींगले  
 होतनरजास॥वाकरफूलजोसेतहीदांहिनेसगनविलास॥१॥सगनदा  
 हिनेचलतजोवारतलेहुकरनामजोवांपेचलतेकहेचरतदाहिनीगाम॥१॥  
 प्रथमापानावाक॥सवैप्रा॥इकतीसावापेप्रेगजातनलोदहिनेपुर्वेक  
 रोपाछेस्रवाकरेपातेहटप्राइये॥प्रागेजोवैलुकरेताहिचोरप्राणहरेप्रे  
 पुनजोकरतदाहिनीचसिद्धिपाइये॥लिंगकोउलारदेरवामेकुरेसारका  
 जैकीसिद्धिप्राइवोहुतेसुखदाइये॥राशसनकोवाकएहिजानीयोपुन

श८